Hindi Play

हिन्दी नाटक

Bhamashah

भामाशाह

Director

Sunita Bharti

Writer

Dr. Chhotu Narayan Singh

www.faces.org.in/bhamashah.html

Project Summary

Play Title	**Bhamashaah**
Duration	**1 hour 15 minutes**
Producer	**Sunita Bharti**
Director	**Sunita Bharti**
Writer	**Dr. Chhotu Narayan Singh**
Number of on stage artists	**14 (3-female & 11-male)**
Number of back stage artists	**7**
Presenting organisation	**Foundation for Art Culture Ethics & Science (FACES)** **Kamta Singh Lane Rai Ji Ki Gali, Esat Boring Canal Road, Patna – 800001** **Website: www.faces.org.in** **E-mail: facespatna@gmail.com** **info@faces.org.in** **Official Mobile No. : 9570085004**

Introduction

1. Objective:

Bhamashah Kavadia (Oswal) is a character in Indian history whose exemplary patriotism and sacrifice for nation is less known to the young generation.

Despite the extraordinary valour of Maharana Pratap Singh, dignity and freedom of Mewar wouldn't be saved from the invaders, had Bhamashah not sacrificed up to the last penny of his ancestral wealth.

The story of sacrifice and generosity of Bhamashah for his motherland must be known to every citizen of India, child or adult, to show how our ancestors always positioned 'national causes' above the 'personal interests'.

The objective of the play Bhamashah is to make the story of patriotism and sacrifice of Bhamashah known to the masses with a message of "Love for Nation".

This play has been prepared and produced with additional objective of using theatre as a tool of culture-conservation and education. The play is totally based on the historical facts and its fiction part is fabricated strictly around them. Thus the play falls under the category of 'infotainment' and serves as a curricular lesson of history. Unlike popular period dramas, Bhamashah stands out fully adhered to the academic values of the story.

2. Script:

The play Bhamashah is collected in the book 'Tap-Sampada', a collection of three plays written by Dr. Chhotu Narayan Singh, published in 2014 by Sunita Publishing House, Patna.

Arvind Kumar, the copyright holder of the book, improved the script and researched on the costumes and social trends of the epoch concerned, to add the reality in the drama.

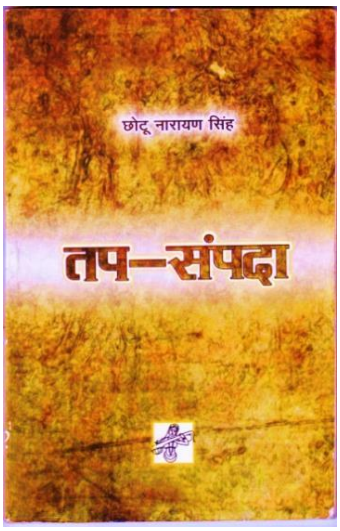

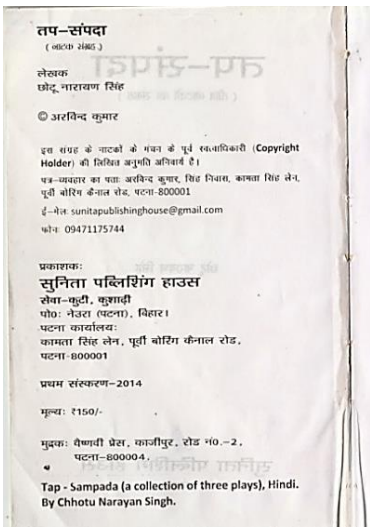

तप–संपदा
(नाटक संग्रह)

लेखक
छोटू नारायण सिंह

© अरविन्द कुमार

इस संग्रह के नाटकों के मंचन के पूर्व स्वत्वाधिकारी (Copyright Holder) की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्र–व्यवहार का पता: अरविन्द कुमार, सिंह निवास, कामता सिंह लेन, पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

ई–मेल: sunitapublishinghouse@gmail.com

फोन: 09471175744

प्रकाशक:
सुनिता पब्लिशिंग हाउस
सेवा–कुटी, कुशाढ़ी
पो0: नेउरा (पटना), बिहार।
पटना कार्यालय:
कामता सिंह लेन, पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड,
पटना-800001

प्रथम संस्करण–2014

मूल्य: ₹150/-

मुद्रक: वैष्णवी प्रेस, काजीपुर, रोड नं0.–2,
पटना–800004.

Tap - Sampada (a collection of three plays), Hindi.
By Chhotu Narayan Singh.

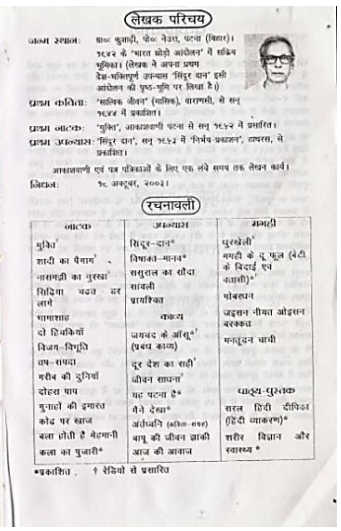

लेखक परिचय

जन्म स्थान: ग्रा0: कुशाढ़ी, पो0: नेउरा, पटना (बिहार)। १९४२ के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय भूमिका। (लेखक ने अपना प्रथम देश-भक्तिपूर्ण उपन्यास 'सिंदूर दान' इसी आंदोलन की पृष्ठ-भूमि पर लिखा है।)

प्रथम कविता: 'सात्विक जीवन' (मासिक), वाराणसी, से सन् १९४४ में प्रकाशित।

प्रथम नाटक: 'मुक्ति', आकाशवाणी पटना से सन् १९५२ में प्रसारित।

प्रथम उपन्यास: 'सिंदूर दान', सन् १९५२ में 'निर्भय-प्रकाशन', हाथरस, से प्रकाशित।

आकाशवाणी एवं पत्र पत्रिकाओं के लिए एक लंबे समय तक लेखन कार्य।

निधन: १८ अक्टूबर, २००३।

रचनावली

नाटक	उपन्यास	मगही
मुक्ति†	सिंदूर–दान*	पुरखेली†
शादी का पैगाम†	विषाक्त–मानव*	मगही के दू फूल (बेटी के बिदाई एवं बतासी)*†
नारागढ़ी का नुस्खा†	ससुराल का सौदा	
सिद्धिया चढ़त डर लागे	सांवली	मोबत्पन
भामाशाह	प्रायश्चित	जइसन नीयत ओइसन बरक्कत
दो हिचकियाँ	काव्य	मनतूढन चाची
विजय–विभूति	जयचंद के आँसू*† (प्रबंध काव्य)	
तप–संपदा	दूर देश का राही†	
गरीब की दुनियाँ	जीवन साधना†	पाठ्य-पुस्तक
दोहरा पाप	यह पटना है*	सरल हिंदी दीपिका (हिंदी व्याकरण)*
गुनाहों की इमारत	मैंने देखा*	शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य *
कोढ़ पर खाज	अंतर्ध्वनि (कविता-संग्रह)	
बला होती है मेहमानी	बापू की जीवन झांकी	
कला का पुजारी*	आज की आवाज	

*प्रकाशित , † रेडियो से प्रसारित

3. Story

The play starts with the symbolic scene of the Battle of Haldighat (18 June 1576 AD).

Scene 1 depicts the sufferings of Maharana Pratap Singh and his family during his exile in the forests of Arawali after he lost the battle of Haldighat, where his minister Bhamashah and queen Ajbaida Kunwar boost him morally.

The second scene shows a fictitious story of Khuddiram, a businessman who joins hands with Mughal agents in collecting and hoarding grains to create an apparent famine in Mewar in order to break the patriots and ultimately Maharana. Khuddiram tries to buy grains from Bhamashah who was aware of the Mughal conspiracy. Bhamashah reproves Khuddiram for his anti-national act, but remains unable to deter him.

The subsequent scenes depict the efforts of Bhamashah to thwart the nasty diplomatic endeavours of the Mughal Sultanate. He, himself starts buying grains from farmers at same rate Moghul agents were buying, to prevent the stock going in to the hands of enemies. He communicated with the farmers and made them alarmed of the deceitful tact of the enemy. Kuddiram, ultimately being cheated and robbed by his Mughal friends, of everything he had earned by betraying the interest of his motherland, comes under the patronage of Bhamashah and start serving the motherland to expiate for his sins.

The last scene (8^{th}) is the climax of the drama depicting the events of around 1580 AD, when Bhamashah donates all of his wealth for the disposal of Maharana to resurrect Mewar.

Thus the play glorifies the sacrifice of our patriots and gives a clear message that ***by betraying the interest nation no one can be happy***.

The Second Show

(Financed Under CFPGS, Dept. of Culture, Govt. of India)

Staged at Kalidas Rangalay Patna on 20th of November 2017.

Video Links of the Play

https://youtu.be/tHxHE_JtQS4

Video Link of the Slide-Show

https://youtu.be/WTbO_qp-Vg0

Testimonials

A score of audience expressed their views on BHAMASHAH after show and appreciated the endeavour.

Video Link of Audience Testimonial

https://youtu.be/XBlHU0oDmmg

Video Link of the On-Stage Review

https://youtu.be/XBlHU0oDmmg

Media Coverage

Almost all leading News Papers published the coverage of Bhamashah. Followings are the clippings:

पटना **जागरण सिटी**

दैनिक जागरण | पटना, 21 नवंबर 2017 | www.jagran.com

जधानी में
बेअसर

कीमत, प्रति किलो, रुपये में		
सब्जी	अब	पिछले सप्ताह
आलू नया	18-20	24-26
आलू पुराना	6-8	10-12
गोल बैंगन	8-10	12-14
फूल गोभी	10-12	15-20
पत्ता गोभी	15-18	18-20
भिंडी	20-25	20-25
मटर छिमी	60-80	80-100
परवल	20-2	22-26
सीम	20-24	30-40
कटहल	80-100	100-120
सहजन	80-100	120-160

कालिदास रंगालय में नाटक 'भामाशाह' का मंचन करते कलाकार • जागरण

प्रतिष्ठा लौटाने के लिए भामाशाह ने किया त्याग

महारानी दिन-रात धन जोड़ने में जो सुख कभी नहीं मिला, वह आज उसे देश के लिए दान करके मिला है। पराधीनता चाहे शारीरिक हो अथवा मानसिक देश का कलंक है। कुछ ऐसे ही संवाद महान देश-प्रेमी भामशाह द्वारा पेश किया जा रहा था। मौका था फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक एंड साइंस की ओर से सोमवार को डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित एवं सुनीता भारती के निर्देशन में महान राष्ट्रभक्त 'भामाशाह' के मंचन का। मंच पर कलाकारों ने हल्दी-घाटी युद्ध, महाराणा प्रताप सिंह के अरावली के जंगलों में उनके संघर्ष और मंत्री भामाशाह के मनोबल को बढ़ाते हुए दिखाया।

मुगल सल्तनत मेवाड़ की जनता और महाराणा प्रताप को झुकने के लिए विवश करती है। मुगल साम्राज्य मेवाड़ में भुखमरी की स्थिति पैदा करने का प्रयास करती है। ताकि देश की दुर्दशा देख संधि करने या मेवाड़ की जनता प्रताप का साथ छोड़ दे ऐसे षड्यंत्र तैयार करता है। मुगल साम्राज्य अपने मकसद में कामयाब नहीं होता भामाशाह अपने प्रयास से सारी कहानी को पलट देता है। उधर महाराणा प्रताप के सभी साधन समाप्त हो जाता है ऐसे में वह मेवाड़ छोड़ कर थार के उस पार सोग्दोई में प्रवास का फैसला लेता है। भामाशाह मेवाड़ की खोई हुई प्रतिष्ठा को लौटाने के लिए अपने पुरखों और स्वयं के द्वारा अर्जित सारी संपति महाराणा प्रताप को समर्पित कर देता है। इस प्रकार भामाशाह स्वदेश प्रेम और राष्ट्र हित के लिए सबकुछ न्यौछावर कर देता है। मंच पर कलाकारों ने 'जय-स्वदेश' के नारे लगाकर दर्शकों को देश प्रेम के लिए प्रोत्साहित किया। मंच पर सुनीता भारती, कुमुद रंजन, मिथिलेश कुमार सिन्हा, अंशुमान कुमार, विशाल कुमार, अंकित कुमार, आजाद, आद्या, शालिनी सिंह, मोहम्मद सदरूद्दीन आदि ने उम्दा अभिनय कर दर्शकों को ऐतिहासिक दृश्य दिखा तालियां बटोरी।

प्रतिभा | नौ दिसंबर को नवरचना यूनिवर्सिटी में बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किए गए हैं शरद

Dainik Jagran, Patna, 21 November 2018

4 | सिटी फैक्ट | ऐसे तो फंस जाएगा पूर्ण विद्युतीकरण | 19,512 गांवों में बिजली पहुंचाना है नॉर्थ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी को | 13,508 गांवों में बिजली पहुंचा चुकी है नॉर्थ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी | 17,088 गांवों में बिजली पहुंचाना है साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी को | 10,556 गांवों में बिजली पहुंचा चुकी है साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी

दैनिक भास्कर, पटना, मंगलवार, 21 नवंबर, 2017

धर्म . समाज . संस्था

नाटक में दिखी राष्ट्रभक्त व दानवीर भामाशाह की कहानी

पटना|देश में समय-समय पर ऐसे दानवीर हुए हैं जिन्होंने समाज और देश के हित में अपनी सारी संपति दान कर दी है। ऐसे ही दानवीर राष्ट्रभक्त थे भामाशाह जिन्होंने अपनी जिंदगी भर की कमाई अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए दे दी थी। भामाशाह की कहानी को मंच पर दिखा गया सोमवार की शाम कालिदास रंगालय में मंचित नाटक भामाशाह। नाट्य संस्था फेसेस की ओर से मंचित इस नाटक के लेखक थे डॉ छोटू नारायण सिंह वहीं इसका निर्देशन किया था सुनिता भारती ने।

नाटक में दिखाया गया कि भामाशाह मेवाड़ के एक धनी साहूकार और महाराणा प्रताप सिंह तथा उनके बेटे महाराणा अमर सिंह के मंत्री थे। 1576 के हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद महाराणा, अपने परिवार और नायकों के साथ, अरावली के एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक भागते हुए, बिना पर्याप्त साधन और सहयोग के, अकबर के साथ गुरिल्ला युद्ध करते रहे। 1580 के आसपास जब उनके सभी साधन खत्म हो गए और उन्होंने यह समझ लिया कि संगठित सैन्य शक्ति के अभाव में अकबर के साथ मुकाबला करना मुश्किल है, तब उन्होंने मेवाड़ छोड़ कर थार के उस पार सोग्दोई प्रवास का फैसला किया। इसी समय महान दानवीर भामाशाह ने मेवाड़ की खोई हुई प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना के लिए, अपने पुरखो और स्वयं के द्वारा अर्जित सारी संपत्ति महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी, जो 12 वर्षों तक पच्चीस हजार सैनिकों के रख रखाव के लिए पर्याप्त थी। इसी अद्वितीय दान के बदौलत राणा ने पुनः सेना का गठन कर, चित्तौड़, अजमेर और मंडलगढ़ को छोड़ मेवाड़ के अन्य सभी किलों को मुगलों से मुक्त किया जिससे मेवाड़ की स्वतंत्रता कायम रही, और इतिहास में भामाशाह का नाम मेवाड़ के तारणहार के रूप में सदा के लिए अमर हो गया।

सोमवार को कालिदास रंगालय में नाटक भामाशाह का मंचन करते कलाकार।

यह थे कलाकार | सुनिता भारती, डॉ शंकर सुमन, कुमुद रंजन, मिथिलेश कुमार सिन्हा, अंशुमन कुमार, विशाल कुमार, अंकित कुमार, रोहन मिश्र, आर नरेंद्र, चिन्मय माजी, मो. सदरुद्दीन, शुभम सिंह आदि।

मानसून धमाका में मिला फ्रिज

पटना| दैनिक भास्कर मानसून धमाका में आरा के विजे जय किशोर दुबे को पटना के दैनिक भास्कर कार्यालय पुरस्कार में फ्रिज देते बिहार-झारखंड एसएमडी के सीज प्रदीप झा और यूनिट फाइनांस हेड विवेक चौधरी।

एसबीआई में टाउन हॉल मीटि

Dainik Bhaskar, Patna, 21 November 2018

प्राचार्य मौजूद रहे।

भामाशाह की दानवीरता मंच पर जीवंत हुई

पटना | कार्यालय संवाददाता

दिन-रात धन जोड़ने में जो सुख नहीं मिला, वह आज उसे देश के लिए दान करके मिला है..., पराधीनता चाहे शारीरिक हो या मानसिक देश का कलंक है..., यदि यह संपत्ति उसे मिटा सकी तो मुझे इस धरती पर ही स्वर्ग का सुख मिल जाएगा...जब यह संवाद भामाशाह की भूमिका निभा रहे मिथिलेश कुमार सिन्हा बोल रहे थे, तब दृश्य देखने लायक था। कालिदास रंगालय में सोमवार शाम ऐतिहासिक नाटक 'भामाशाह' जीवंत हुआ। फेसेस संस्था के कलाकारों ने डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित इस नाटक को सुनिता भारती के निर्देशन में मंचित किया।

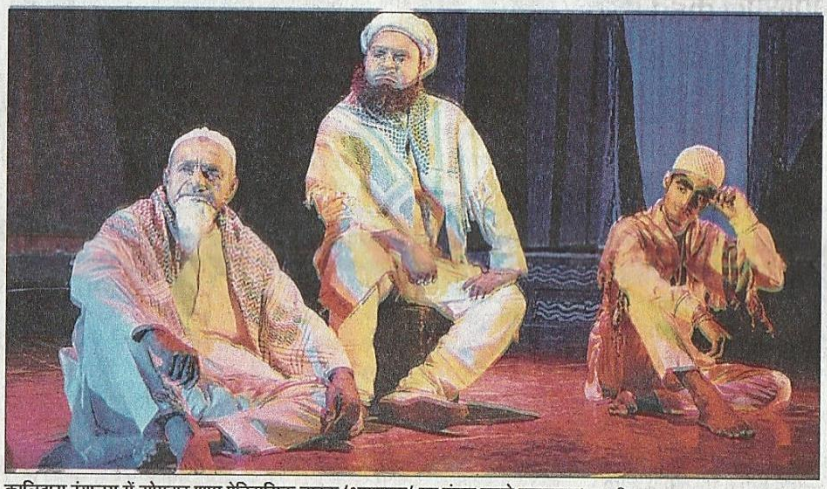

कालिदास रंगालय में सोमवार शाम ऐतिहासिक नाटक 'भामाशाह' का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

इतिहास की बात : हल्दी घाटी युद्ध (1576) के बाद महाराणा प्रताप जंगल में हैं। अकबर कूटनीति से काम ले रहा है। वह जानबुझ कर मेवाड़ में कृत्रिम भुखमरी की स्थिति पैदा कर रहा है, ताकि संधि करने के लिए महाराणा विवश हो जाएं। इधर जनता परेशान है। सैनिकों के सामने भी भुखमरी की स्थिति पैदा होती जा रही है। लेकिन भामाशाह आगे आते हैं। अपने देश और दानवीरता का परिचय देते हैं। जीवनभर की जमापूंजी महाराणा को दान कर देते हैं। 25 हजार सैनिकों के लिए 12 वर्षों तक के लिए रख-रखाव की पर्याप्त व्यवस्था हो जाती है। इन्हीं सब बातों को मंच पर दिखाया गया। फेसेस के कलाकारों ने इसे प्रभावी बनाने की अच्छी कोशिश की। खासकर भामाशाह की भूमिका निभा रहे मिथिलेश कुमार सिन्हा, सुनिता भारती, कुमुद रंजन और डॉ शंकर सुमन ने बढ़िया अभिनय किया।

नाटक के कलाकार : सुनिता भारती, डॉ. शंकर सुमन, कुमुद रंजन, मिथिलेश कुमार सिन्हा, अंशुमन कुमार, विशाल कुमार, अंकित, रोहन मिश्र, आर नरेंद्र, चिन्मय माजी, मो.सदरूद्दीन।

मंच से परे : प्रकाश- उपेंद्र कुमार, संगीत- शुभम सिंह, वस्त्र विन्यास- अरविंद कुमार, मेकअप- अंजु कुमारी, आर्ट- विशेन्द्र नारायण सिंह।

Hindustan, Patna, 21 November 2018

है, इसलिए बीपीएससी-एई की परीक्षा की तैयारी के लिए छात्र-छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में विषय संबंधी किताबों के साथ-साथ ऑनलाइन एवं ऑफलाइन टेस्टसीरीज़ भी उपलब्ध कराती है.

कर रहीं महिलाएं

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में शौर्य गाथा के कारण आज भी भारत अपनी संस्कृति और इतिहास बचाने में कामयाब हुआ है. पांडया ने किया. कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने केक काट कर विश्व बाल निपुण गुप्ता, बाल संरक्षण विशेषज्ञ मंसूर कादरी आदि मौजूद थे.

'कलंक' कालिदास रंगालय में भामाशाह का किया गया मंचन

भुखमरी की स्थिति पैदा करने की कोशिश

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

महारानी दिन-रात धन जोड़ने में मुझे जो सुख कभी नहीं मिलता. वह आज उसे देश के लिए दान करके मिला है. पराधीनता चाहे शारीरिक हो अथवा मानसिक, देश का कलंक है. यदि यह संपत्ति उसे मिटा सकी, तो मुझे इस धरती का सुख मिल जायेगा. यह बातें सुनने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर यहां सोमवार को संस्कृति विभाग भारत सरकार के सौजन्य से डॉ स्वर्गीय डॉ छोटू नारायण सिंह लिखित एवं प्रसिद्ध युवा रंगकर्मी और टेलीविजन अभिनेत्री सुनीता द्वारा निर्देशित ऐतिहासिक तथ्यात्मक नाटक भामाशाह का मंचन किया गया. इस नाटक का प्रस्तुतीकरण संस्कृति और शिक्षा सुधार के लिए कार्यरत संस्था फेसेस द्वारा किया गया है. इस नाटक में सभी कलाकारों ने अपनी बेहतरीन अभिनय से दर्शकों का मन मोह लिया. ऐतिहासिक नाटक के कई डायलॉग्स को सुन दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी.

नाटक का मंचन करते कलाकार.

झुकाने के लिए कूटनीतिक कार्रवाई

भामाशाह का शुरुआत हल्दी-घाटी युद्ध(18जून 17576ई) के सांकेतिक दृश्य से होता है . इसके बाद महाराणा प्रताप सिंह के अरावली जंगलों में उनके संघर्ष के काल को दिखाया गया है . जहां उनकी महारानी और मंत्री माशाह उनके मनोबल बढ़ाते हैं . बाद के तीन दृश्यों में मुगल सल्तालत द्वारा मेवाड़ की जनता और महाराणा प्रताप को झुकाने के लिए कूटनीतिक कार्रवाई को दिखाया गया है, जिसमें मुगल सल्तनत द्वारा कृत्रिम रूप मेवाड़ की भुखमरी स्थिति पैदा करने की कोशिश की जाती है, ताकि राणाप्रताप अपने देश की दुर्दशा देखसंधि कर ले और मेवाड़ की जनता प्रताप का साथ छोड़ दे . बाद दे दृश्य में भामाशाह द्वारा मुगल सल्तनत के इस प्रयास को विफल करने की कहानी भी दिखायी गयी है . और अंत में भामाशाह का ऐतिहासिक दान दिखाया गया है . यह घटना 1580 ई के आसपास की है . इस ऐतिहासिक नाटक को बेहतरीन अभिनय के साथ मंच पर प्रस्तुत किया गया .

छह महीना लेट चल रहा पीजी का सेशन

पटना. मगध विश्वविद्यालय का सेमेस्टर सिस्टम बेपटरी हो गया है. सेशन करीब छह महीना से अधिक लेट चल रहा है. जहां अभी सेकेंड व फोर्थ सेमेस्टर की परीक्षा दिसंबर में होनी चाहिए थी उसका क्लास अभी शुरू ही हुआ है. थर्ड सेमेस्टर का अभी रिजल्ट ही आया है कुछ दिन पहले. वहीं नये सत्र का तो एडमिशन भी नहीं हुआ है. दिसंबर में उसकी भी कक्षाएं शुरू होंगी. एक साथ फर्स्ट, सेकेंड व फोर्थ सेमेस्टर की क्लास चलेगी. एक समय में सिर्फ दो ही सेमेस्टर चलते हैं. यह सब लेट सत्र के कारण हो रहा है. एमयू में अभी फर्स्ट सेमेस्टर का क्लास भी शुरू नहीं हुआ है. कुलपति प्रो कमर अहसन में भी सेमेस्टर सिस्टम को जल्द ही पटरी पर लाने की बात कहीं थी लेकिन अभी तक जो स्थिति है उससे लग रहा है कि विवि अपने पुराने ढर्रे पर ही चल रहा है

Prabhat-Khabar, Patna, 21 November 2018

सारी सम्पत्ति देकर भामाशाह ने बचायी मेवाड़ की प्रतिष्ठा

पटना (एसएनबी)। कालिदास रंगालय में सोमवार को डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित और सुनिता भारती निर्देशित ऐतिहासिक तथ्यात्मक नाटक 'भामाशाह' का मंचन किया गया। नाटक का मंचन फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक्स एंड साइंस (फेसेस) के तत्वावधान में किया गया। नाटक के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि स्वदेश की प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता के आगे व्यक्तिगत लाभ और सुख का कोई स्थान नहीं होता।

नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

कथासार

नाटक भामाशाह का आरम्भ हल्दी-घाटी युद्ध (18 जून 1576 ई) के सांकेतिक दृश्य से होता है। इसके बाद महाराणा प्रताप सिंह के अरावली के जंगलों में उनके संघर्ष के काल को दिखाया गया है, जहां उनकी महारानी और मंत्री भामाशाह उनके मनोबल बढ़ाते हैं।बाद के तीन दृश्यों में मुगल सल्तनत द्वारा मेवाड़ की जनता और महाराणा प्रताप को झुकाने के लिए कूटनीतिक कार्रवाइयों को दिखाया गया। जिसमें मुगल सल्तनत कृत्रिम रूप से मेवाड़ में भुखमरी की स्थिति पैदा करने की कोशिश की जाती है, ताकि राणाप्रताप अपने देश की दुर्दशा देख संधि कर ले या मेवाड़ की जनता प्रताप का साथ छोड़ दे। पांचवें, छट्ठे और सातवें दृश्य में भामाशाह मुगल सल्तनत के इस प्रयास को विफल करने की कहानी दिखाई गयी है। आठवें व अंतिम दृश्य नाटक का चरम है। जिसमें भामाशाह का ऐतिहासिक दान दिखाया गया है। यह घटना 1580 ई. के आसपास की है, जब महाराणा प्रताप के सभी साधन खत्म हो गए और उन्होंने यह समझ लिया कि संगठित सैन्य शक्ति के अभाव में अकबर के साथ मुकाबला करना मुश्किल है। तब उन्होंने मेवाड़ छोड़ कर थार के उस पार सोग्दोई प्रवास का फैसला किया। इसी समय भामाशाह ने मेवाड़ की खोयी हुई प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना के लिए अपने पुरखों और स्वयं की अर्जित सारी संपत्ति महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी। नाटक में सुनीता भारती, डॉ शंकर सुमन, कुमुद रंजन, मिथिलेश, अंशुमन, विशाल, अंकित, रोहन मिश्र, आर नरेन्द्र, चिन्मय माजी, मो.सदरुद्दीन, आजाद व आद्या ने अभिनय किया।

Rashtriy Sahara, 21 November 2018

कालिदास रंगालय में 'भामाशाह' का एक भावपूर्ण दृश्य।

Aaj, Patna, 21 November 2018

विमोचन
▪ पॉपुलेशन कांउसिल की ओर से उदया रिपोर्ट का विमोचन, स्थान- होटल लेमन ट्री, समय- 3:00 बजे

रंगमंच
▪ नाटक भामाशाह का मंचन, स्थान- कालिदास रंगालय, समय- 6:00 बजे

Dainik Bhaskar, Patna, 19 November 2018, notification of the show BHAMASHAH

About the Director : Sunita Bharti

Sunita Bharti, the famous young director and actor from Patna, is known for her innovative application of 'Theatre' in Education, Public Museology and promotion of Cultural/Ethical values. Through her theatrical productions, she has successfully shown that theatre can be an effective tool in education and public museology. Her famous production "Yakshini", the first Hindi play based on the Mauryan sculpture "Didarganj Chawri Bearer Female Figure" (popularly known as Didarganj Yakshini) is the first celebrated theatrical production in Public Museology in India and first ever Hindi play based on an ancient artefact of archaeological importance.

संगिनी 9 सितम्बर 2017 दैनिक जागरण 2

नाटकों को शिक्षा का पर्याय बना रहीं सुनीता

बेमिसाल

• चारुस्मिता

यक्षिणी नाटक की धोबिन और यक्षिणी किसे याद नहीं होगी। यह रंगमंच के क्षेत्र में ऐसा प्रयोग था जिसने हर वर्ग के दर्शकों को जोड़ा। सुनीता भारती रंगमंच की एक ऐसी कलाकार हैं जिन्होंने पहली बार शिक्षा में नाटक का प्रयोग किया। रंगमंच के बैकग्राउंड से न होने के बावजूद उन्होंने नाटक को एक ऐसी दिशा दी है जिससे वह युवाओं को अपनी धरोहरों से जोड़ रही हैं। एक रिपोर्ट।

कहते हैं अगर आपमें सीखने की ललक है तो उम्र मायने नहीं रखती। पटना की मूल निवासी सुनीता की न तो बचपन से कभी रंगकर्म में रुचि रही और न ही उनके घर में कला का माहौल ही था। उनका बचपन धनबाद के मैथन में गुजरा। शिक्षा दीक्षा के बाद उनकी शादी भौतिकी के लेक्चरर अरविंद कुमार से हुई। पति के कला के क्षेत्र में गहरे रुझान के कारण जब वह पहली बार नाटक देखने गईं तो उनका रंगमंच पर दिल आ गया। कालिदास रंगालय में 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन चल रहा था जब सुनीता को लगा कि यह एक ऐसा माध्यम है जिससे वह कई समसामयिक मुद्दों पर काम कर सकती हैं और लोगों को जागरूक भी कर सकती हैं। इसके बाद शुरु हुआ उनके रंगमंच का सफर।

40 नाटकों में किया अभिनय

उस वक्त उनकी उम्र 29 की रही होगी जब उन्होंने थिएटर की तरफ रुख किया। वह बताती हैं कि उन्हें अभिनय ने इस कदर अपनी ओर खींचा कि उन्होंने बिहार स्कूल थिएटर में एडमिशन ले लिया। सद्गति के बाद थिएटर जगत में उनकी काफी चर्चा हुई। इसके बाद इनका सफर जो शुरू हुआ वह अब भी चल रहा है। नागमंडल, गोरा, यक्षिणी सहित अभी तक उन्होंने करीब 40 नाटकों में अभिनय किया है। इसके अलावा वह दूरदर्शन पर भी कई नाटकों में अभिनय कर चुकी हैं जिसमें डी डी किसान, कृषि दर्शन प्रमुख है। स्मिता पाटिल, हबीब तनवीर, नाना पाटेकर, रोहिणी हसन जैसे शख्सियतों को अपना आदर्श मानने वाली सुनीता बताती हैं कि अभी तो सफर की शुरुआत हुई है मंजिल मिलनी अभी बाकी है।

युवाओं को करती हैं जागरूक

सुनीता युवाओं को अपने धरोहरों के बारे में जागरूक करती हैं। शिक्षा में नाटक के प्रयोग से युवाओं को अपने धरोहर से जोड़ने का काम इन्होंने ही शुरू किया है। इसमें वह शहर के पुरातात्विक धरोहरों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए नाटक की प्रस्तुति करती हैं। फाउंडेशन फॉर कल्चर, एथिक एंड साइंस इनकी एक संस्था है जिसके माध्यम से वह कॉलेज और स्कूल के छात्रों को जोड़ती हैं। इस संस्था में वह युवाओं को जोड़कर उन्हें अभिनय के साथ अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां भी सिखाती हैं। इसी क्रम में इनका यक्षिणी नाटक काफी दिनों तक चर्चा का विषय भी रहा था। इसमें इन्होंने नाटक के माध्यम से यक्षिणी जैसी प्राचीनतम मूर्ति के बहाने पटना के तत्कालीन इतिहास को भी दिखाया था। इस नाटक में वह यक्षिणी और बुलकनी धोबिन की भूमिका में थीं। उनके इस नाटक का मंचन पटना म्यूजियम के सौ साल होने पर किया था। इसे इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन के द्वारा भी दिखाया गया। वह बताती हैं कि इस संस्था का मुख्य उद्देश्य युवाओं को अपने स्वर्णिम इतिहास के बारे में कला के माध्यम से जोड़ना है। यक्षिणी के बाद बुद्ध के अस्थि कलश पर नाटक की योजना है इससे लोग बुद्ध के बारे में विस्तार से जान पाएंगे।

She produced and directed Bhamashah successfully, as a part of her praiseworthy campaign of popularising and reconstructing the aura of our historical heroes/icons among the masses with the message of “Love for Nation”.

prabhatkhabar.com
प्रभात खबर
लाइफ पटना
जर्नलिज्म जिंदगी का
पटना, बुधवार 21.02.2018 09

शिक्षा को जोड़ता है नाटक

2014 से सुनीता भारती ने रंगमंच में कदम रखा है. सुनीता भारती के पति अरविंद कुमार एक लेखक हैं. उन्होंने पहली बार नाटक देखने के लिए कालिदास रंगालय में सुनीता भारती को ले गये. वहां सुनीता भारती को लगा कि मैं भी नाटक कर सकती हूं. उसके बाद उन्होंने बीआइडी में एडमिशन करवाया और लगातार नाटक में सक्रिय रहीं. उनका पहला नाटक सद्गति में छोटी सी भूमिका में वे नजर आयी थी. उसके बाद अब तक 40 से ज्यादा नाटकों में वे दिखीं. एक्टिंग के साथ-साथ उन्होंने डायरेक्शन भी शुरू किया. सुनीता भारती ने सहायक निर्देशन की भूमिका में ‘अंधा युग’ नाटक किया. निर्देशन के रूप में पहला नाटक ‘यक्षिणी’ को उन्होंने किया. इसका तीन बार उन्होंने मंचन किया. भामाशाह, जयचंद के आंसू, मैं हूं पटना संग्रहालय, नया बंगला व अन्य नाटकों का भी उन्होंने निर्देशन किया है. वे नाटकों में शिक्षा को जोड़ कर प्रदर्शन करती हैं.

निर्देशन में कदम पुख्ता करतीं ये महिलाएं

पटना रंगमंच की चर्चा पूरे देश में होती है. कई नाटक ऐसे हैं, जिन्हें देखने के लिए पटना के कलाकारों को दूसरे राज्यों से कॉल जाता है. इसमें सबसे बड़ा श्रेय पटना के कलाकारों को जाता है. पुरुष कलाकार से लेकर महिला कलाकार भी इनमें शामिल हैं. एक वक्त था, जब कुछेक महिला कलाकार ही रंगमंच पर दिखती थीं. लेकिन अब महिलाएं केवल मंच पर ही नहीं बल्कि पूरे नाटक को दिखाने की कमान संभाल रही हैं. इन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में भी अब खुद को साबित किया है.

सुनीता भारती

Sunita Bharti is known for her exemplary work of incorporating theater with education. This maiden effort of hers is aimed at creating a new genre of theater audience, conservation of cultural heritages and tradition and expanding the scope of theater as a tool of teaching.

Other unique directorial ventures of Sunita Bharti

Yakshini

The first Hindi play based on an archaeological artefact, the Didarganj Chawri Bearer Female Figure, popularly known as Didarganj Yakshini. The play is first example of theatre in Public Museology.

Jaychand Ke Ansu

A poetic play based on the eponymous poetic work of Dr. Chhotu Narayan Singh, giving an account of the mental suffering and lamenting of Raja Jaaychand of Kannauj after he was defeated and humiliated by his onetime ally Muhammad of Ghor.

Bhamashah

The Saga of the Greatest Saviour of the Indian Soil!

Produced By

Foundation for Art Culture Ethics & Science (FACES)

(Reg. under Society Registration Act XXI 1860)

Kamta Singh Lane East Boring Canal Road, Patna – 800001

Website: www.faces.org.in Email: facespatna@gmail.com

www.youtube.com/c/FoundationforArtCultureEthicsScienceFACES

[Short Link: https://goo.gl/YXB7ro]

Contact: 9570085004